स्नेहबंध

जीवन परिचय

मालती जोशी

सुप्रसिद्ध महिला कहानीकार श्रीमती मालती जोशी का जन्म औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के मध्यमवर्गीय मराठी परिवार में 4 जून सन् 1934 ई. को हुआ था। किशोरावस्था से ही इन्होंने लिखना प्रारंभ कर दिया था। प्रारंभ में कुछ गीत लिखे जो कवि सम्मेलनों के माध्यम से चर्चित हुए। बाद में कहानियाँ लिखना शुरू किया। आप बच्चों के लिए भी 2-3 वर्षों तक खूब लिखती रहीं। इनकी अनेक रचनाएँ देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही। कुछ रचनाओं का मराठी, कन्नड़, गुजराती और अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ है।

श्रीमती जोशी को कहानी लेखन के लिए अनेक पुरस्कार मिले हैं। उन्हें विभिन्न उपाधियों से सम्मानित और पुरस्कृत किया गया है। रेडियो और दूरदर्शन से आपकी अनेक कहानियों का नाट्य-रुपान्तर प्रसारित हुआ है।

आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं - समर्पण का सुख, सहचारिणी, मध्यान्तर, दादी की घड़ी, जीने की राह आदि।

कहानी संग्रह - पाषाण युग, तेरा

केंद्रीय भाव:-'स्नेह बंध' कहानी का घटनाक्रम मुख्यत: मीता और उसकी सास के इर्द-गिर्द घूमता है। कई बार बाह्य आचरण या व्यवहार से हम किसी के बारे में जो धारणा बना लेते हैं उससे मुक्त होना अत्यन्त कठिन होता है। मीता की होने वाली सास प्रथम परिचय के समय ही मीता के उन्मुक्त, सहज और स्वाभाविक व्यवहार को उसकी उच्छृंखलता समझ लेती है। मीता का आचरण उसकी सास के मन में अंकित परम्परागत मध्यमवर्गीय संस्कारों में ढली बहू के चित्र से मेल नहीं खाता है। सास-बहू के बीच की यह दूरियाँ लंबे समय तक ख़त्म नहीं होतीं। कहानी में ऐसा क्षण भी आता है जब उनकी दूरियाँ कुछ कम होती प्रतीत होती हैं। पर सास का अहं, हठधर्मिता तथा पूर्वग्रह संबंधों को सहज बनाने में बाधक सिद्ध होता है। मीता की सास का यह व्यवहार उनके पति और दोनों पुत्र (मीता का पति) तथा शिव को भी पसंद नहीं है पर उन्हें (मीता की सास)को ठेस न लगे इसलिए सहन कर लेते हैं। एक दिन मीता का पति विदेश चला जाता है। ससुर के आग्रह के बाद भी मीता पति के साथ नहीं जाती क्योंकि वह नहीं चाहती उसके विदेश जाने के लिए अनावश्यक व्यय किया जाए। उसकी यह भावना अपने घर के प्रति उसके उत्तरदायित्व की परिचायक है। एक दिन जब मीता अपने मायके में थी उसके ससुर की तबीयत अचानक ख़राब हो जाती है। मीता को पता चलने पर वह तत्काल अस्पताल आकर उनका अच्छा इलाज कराती है। उसकी सेवा-सुश्रुषा तथा कर्तव्य भावना देखकर उसकी सास का हृदय परिवर्तित हो जाता है। उन्हें मीता बहू के रूप में ही नहीं बेटी के रूप में भी दिखाई देने लगती है। कहानी में बदलते सामाजिक परिवेश में सास-बहू के संबंधों का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है।

''माँ, ये हैं मीतू-मैत्रेयी।''

ध्रुव ने परिचय करवाया तो देखती ही रह गई। कटे बाल के नीचे एक छोटा-सा चेहरा - वह भी आधा धूप के चश्मे से ढँका हुआ। गहरे नीले रंग के ऊपर चटख पीले रंग का स्वैटर उसकी बुनाई। इतनी प्यारी कि कोई और होता तो पास बिठाकर पहले बुनाई उतार लेती-बाकी बातें

घर मेरा घर, पिया पीर न जानी, मोरी रंग दीनी चुनरिया, बाबुल का घर, महकते-रिश्ते। मराठी और हिंदी में उनकी अब तक 41 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

श्रीमती जोशी की भाषा सहज, सरल और संवेदनशील है। उन्होंने मध्यमवर्गीय परिवारों की गहन-मानवीय-संवेदनाओं के साथ नारी मन के सूक्ष्म-स्पंदनों की पहचान की है। कहानियों में स्थानीय शब्दों के साथ अलंकारिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है, जिससे सभी कहानियाँ मार्मिक और हृदयस्पर्शी बन पड़ी हैं।

महिला कहानीकारों में श्रीमती जोशी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्होंने आधुनिक हिंदी कहानी को एक सार्थक और नई दिशा प्रदान की।

बाद में होतीं।

पर ये मीतू थी-मैत्रेयी। अपनी सारी प्रतिक्रिया मन ही में समेटकर मैंने सहज स्वर में कहा, ''बैठक में चलकर बैठो तुम लोग, मैं पापा को बुला लाऊँ।''

बच्चों के पापा बगिया में आराम कुर्सी में लेटे अखबार पढ़ रहे थे। चार पन्नों का अखबार है, लेकिन पढ़ने में सुबह से शाम कर देंगे। अपनी सारी खीज उन पर उड़ेलते हुए मैंने कहा, ''बहूरानी आई हैं, चलकर मुआयना कर लीजिए।''

''बहूरानी!'' उन्होंने चौंककर पूछा, फिर चश्मा उतारकर मुझे सीधे देखते हुए बोले, ''बहूरानी आई है तो तुम्हारा स्वर इतना तल्ख क्यों हैं?''

एक-दो नहीं, साथ रहते पूरे अट्ठाईस साल हो गए हैं। मेरे स्वर का एक-एक उतार-चढ़ाव उन्हें कंठस्थ हो गया है। फिर भी मैंने कोई जवाब नहीं दिया और चाय बनाने के बहाने रसोई में चली गई।

आधा-पौने घंटे बाद जब चाय-नाश्ता सजाकर बाहर ले गई, उस समय बैठक कहकहों से गुलजार थी। इस बीच शायद शिव भी कॉलेज से लौट आया था और उसी के किसी चुटकुले पर सब लोग ठहाके लगा रहे थे।

मुझे देखते ही शिव ने आगे बढ़कर ट्रे थाम ली। ध्रुव ने मेज से सारा कबाड़ हटाकर जगह बनाई। पानी का जग और चटनी की शीशी अंदर छूट गई थी। ट्रे रखकर शिव दौड़कर दोनों चीज़ें ले आया। सब कुछ एकदम स्वाभाविक ढंग से ही हो रहा था। जब से सविता ससुराल गई है, बच्चे इसी तरह माँ का हाथ बँटा लेते हैं। पर पता नहीं क्यों आज मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा। थोड़ा सब्र तो किया होता इन लोगों ने। मैं भी तो देखती मीतू नाम की यह लड़की कितना अदब-कायदा जानती है। घर की बहू बनकर आ रही है, यह तो हुआ नहीं कि ख़ुद चलकर रसोई घर तक आती, झूठमूठ ही सही, मदद के लिए पूछती। बस, लाट साहब की तरह बाहर बैठी रही। लड़के बेचारे बैरों की तरह दौड़-धूप कर रहे हैं।

नाश्ते के लिए गरम समोसे बना लिए थे। सूजी के लड्डू और घर का बना चिवड़ा भी साथ था।

''हाय माँ! आपने यह सब घर पर बनाया है,'' मीता किलककर बोली, ''मैं तो विश्वास नहीं कर सकती-रोज इतना भारी नाश्ता देती हैं आप! तभी आपके दोनों सुपुत्र मोटूमल हो रहे हैं।''

''ऐ! हमें नज़र मत लगाओ,'' ध्रुव ने टोका, ''माँ की जीवन-भर की साधना है हमारे पीछे।''

''जानती हैं मीताजी,'' शिव ने कृत्रिम गंभीरता ओढ़कर कहा, ''माँ ने हमको खिला-पिलाकर ऐसा तैयार कर

दिया है कि अब कैसी ही कर्कश बीवी मिले, हम निपट लेंगे। मैदान छोड़कर भागेंगे नहीं।''

कमरा एक बार फिर हँसी में डूब गया। मुझे लेकिन बड़ा ताव आ रहा था। मेरे बच्चों को मोटूमल कहने का हक इसे किसने दे दिया? अभी तो घर में आई भी नहीं और रौब झाड़ने लगी? वाह, यह भी कोई बात हुई। तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें नहीं खिलाया तो हम क्या करें? तुम अपने राज में डबलरोटी खिला-खिलाकर उसे दुबला कर लेना-बस!

''चलूँ माँ,'' मैंने अपनी तन्द्रा से चौंककर देखा, सब लोग उठ खड़े हो गए थे, मीता नमस्ते कर रही थी। फिर वह चली गई दरवाजे तक छोड़कर हम लोग लौट आए। ध्रुव उसे घर तक छोड़ने चला गया। ''पहली बार आई थी'' बच्चों के पापा घर में आते ही शुरू हो गए, ''जिस-तिस को तो तुम नेग बाँटती फिरती हो। उसे यूँ ही खाली हाथ भेज दिया।''

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। खाली प्लेट-प्याले समेटकर रसोई में चली आई। हुँह! पहली बार आई थी तो कोई क्या करे। रीति-रिवाजों का ठेका क्या हमने ही ले रखा है। वह क्या एक बार झुककर पैर नहीं छू सकती थी। एकदम ही अंग्रेज बनी जा रही थी।

सारी शाम मैं रसोई में ही बनी रही। मुझे मालूम था, मेरी प्रतिक्रिया जानने को सब उत्सुक होंगे। पर मैंने किसी को हवा नहीं लगने दी। शिव एक-दो बार आकर मँडरा गया, पर मैं व्यस्त होने का दिखावा करती रही।

रात खाने की मेज पर भी एक अव्यक्त तनाव था। बच्चों के पापा ने एक-दो चुटकुले सुनाकर उसे तोड़ने की कोशिश भी की, पर बात कुछ बनी नहीं।

खाने के बाद भी काम कहाँ खत्म होता है, सारे दरवाज़े-खिड़कियाँ मुझे ही देखने होते हैं। घर-भर की बत्तियाँ बुझानी होती हैं। टंकी में पाइप छोड़ना होता है। दूध-दही के बर्तनों को जाली की अलमारी में रखना होता है। आँगन में सूखते कपड़े उतारना होता है।

एक-एक काम निपटाती जा रही थी कि देखा, ध्रुव पास आकर खड़ा हो गया है।

''माँ!'' उसने काँपते हुए स्वर में पुकारा।

''क्या है?'' तौलिए को तहाते हुए मैंने पूछा।

''तुम्हें तुम्हें मीता कैसी लगी?''

''मेरे लगने का क्या है, तुम्हें पसंद आनी चाहिए, बस!''

''नहीं माँ, तुम्हारी पसंद बहुत ज़रूरी है। तुम्हारी और पापा की।''

शाम से मन में जो अंधड़ उठ रहा था, ध्रुव के प्रश्न से तीव्र हो उठा।

''तुमने जवाब नहीं दिया माँ!''

''अच्छा, यह बताओ, क्या उसे पता था कि तुम उसे कहाँ ले जा रहे हो'' मैंने प्रति प्रश्न किया।

''हाँ, क्यों?''

''तो क्या वह ढंग के कपड़े पहनकर नहीं आ सकती थी? कम से कम तुम उसे–..... मैंने कहा था, माँ।

''फिर?''

वह बोली – ''मैं जैसी हूँ वैसी ही उन्हें देख लेने दो। बेकार नाटक करने से फायदा .....– ख़ैर, कपड़ों को छोड़ो। वैसे कैसी लगी, बताओ।''

ध्रुव इतनी आजिजी से पूछ रहा था कि उसका दिल दुखाते न बना। ''अच्छी है,'' मैंने अनमने ढंग से कहा और बात समाप्त कर दी। वरना सच तो यह था कि मैंने मीता को ठीक से देखा ही नहीं था। पहली ही नजर में उसका हुलिया देखा और मन खट्टा हो गया था। बहू को लेकर मन में कितनी कोमल कल्पनाएँ थीं, सब राख हो गई थीं। गुस्सा तो अपने लाड़ले पर आ रहा था। प्रेम करते समय इन लोगों की अक्ल क्या घास चरने चली जाती है।

कैसे प्यारे–प्यारे रिश्ते आ रहे थे पर तकदीर में तो यह सर्कस–सुन्दरी लिखी थी न!

एक उसाँस भरकर रह गई मैं।

एक बार हम लोगों की स्वीकृति की मुहर लगने भर की देर थी। फिर तो सारे काम फटाफट और कायदे से होते चले गए। मीता के पिताजी स्वयं घर आए और उन्होंने औपचारिक रूप से रिश्ते की पहल की। मीता को अपनी बहू बना लेने के लिए करबद्ध निवेदन किया– उन्होंने बताया कि पत्नी की मृत्यु के बाद उनके बच्चे अक्सर हॉस्टल में ही पले हैं। वे भी हमेशा टूर पर ही बने रहे। दो साल पहले लड़के की शादी हुई है। तब से घर कुछ आकार ग्रहण करने लगा है। हॉस्टल में रहने के कारण मीतू काफी कुछ सीखने से वंचित रह गई है। वे तो डर रहे थे, पर ध्रुव ने उन्हें आश्वस्त किया है कि माँ बहुत सहनशील और स्नेहमयी हैं, वे उसे अपने अनुसार ढाल लेंगी।

उत्तर में ध्रुव के पापा ने भी उन्हें आश्वस्त किया। कहा कि हम लोग इतने दकियानूसी नहीं हैं कि एक आर्किटेक्ट लड़की में सोलहवीं सदी की बहू तलाशें।

इस प्रकार बहुत ही सौजन्यपूर्ण वातावरण में परिचय का पहला दौर समाप्त हुआ। फिर धूमधाम से सगाई हुई।

एक सूची मैंने ध्रुव को पकड़ाई थी। सूची क्या थी, होनेवाली बहू के लिए पूरी आचारसंहिता थी:

- मीता अब शादी के बाद ही इस घर में आएगी।
- भविष्य में वह बाल नहीं कटवाएगी।
- हाथ में चूड़ियाँ डालने की आदत डालेगी।
- शादी में सिर ढकेगी।
- घर में मेहमान रहेंगे तब तक साड़ी पहनेगी।
- लोगों के सामने ध्रुव को नाम लेकर नहीं पुकारेगी।

खूब लंबी सूची थी। बारीक से बारीक जो भी बात याद आती गई, जोड़ दी थी। शिव ने तो उसका नाम बीससूत्री

कार्यक्रम रख दिया था। आते-जाते ध्रुव को छेड़ देता, ''दादा भाई, भाभी को कितने सूत्र रटा दिए?''

कभी कहता, ''भाभी से कहना, फर्स्ट डिवीजन आने से भी चलेगा, पर कम से कम पास होने लायक नम्बर तो आने ही चाहिए। ''

यह छेड़छाड़ सिर्फ मजाक के तौर पर नहीं होती थी। इसमें एक अव्यक्त आक्रोश भी था। माँ के कारण उन लोगों की छाप एकदम पुरातन-पंथी हो गई थी। ध्रुव मुँह से तो कुछ नहीं कहता था, पर शिव के छेड़ने पर उदास जैसी हँसी हँस देता, उससे यह स्पष्ट हो जाता था।

आखिर एक दिन मैंने कह ही दिया, ''देखो शिव, ये मजाक उड़ानेवाली बात नहीं है। ये मत सोचो कि मैं अपने लिए कुछ कर रही हूँ। मेरी तो बस यही इच्छा है कि नई बहू की आते ही आलोचना न शुरू हो जाए आख़िर मेरी भी तो वह कुछ लगती है-और तुम तो जानते हो-शादियों में कुछ लोग आते ही इसी मकसद से हैं कि नुक्स निकालें और आलोचना शुरू कर दें।''

बच्चे इसके बाद चुप हो गए थे।

वैसे मैने एकदम ग़लत भी नहीं कहा था। शादी में सचमुच कुछ लोग मीनमेख निकालने के लिए ही आते हैं। नयी-नवेली दुलहनों को सबसे ज़्यादा आलोचना झेलनी पड़ती है। झूठ क्यों बोलूँ-ख़ुद ही मैं कई बार इस अभियान में सम्मिलित हुई हूँ। दोनों ओर के परिवारों में अब तक जितनी बहुएँ आईं हैं। सबके लिए मेरे पास कहने के लिए कुछ न कुछ है। सुरेश की बहू रसोई तक में चप्पलें पहनकर घूमती है। महेश की बहू नौ बजे से पहले बिस्तर नहीं छोड़ती। राजन की बहू रसोई में झाँकती तक नहीं। आलोक की बहू चौबीसों घंटे उसके नाम का जाप करती रहती है। जेठ, ससुर तक का उसे होश नहीं रहता। निखिल की बहू तो और भी तीसमारखाँ है। जहाँ पति को चार लोगों के बीच हँसते-बोलते देखेगी, बच्चे को लद्द से लाकर गोद में पटक देगी।

ये सारे नमूने मेरी आँखों के सामने थे, इसलिए मन में एक आदर्श बहू की कल्पना थी। सोचा था कि ध्रुव के लिए जो लड़की लाऊँगी वह इन सबसे अलग होगी।

पर अपना सोचा सब कहाँ हो पाता है!

''तुम्हारी सारी शर्तों का पालन करेगी तब तो तुम्हें वह अच्छी लगेगी न माँ!'' ध्रुव ने एक दिन गले में बाँहें डालकर बड़ी आशा से पूछा था। तब यही सोचकर संतोष कर लिया था कि लड़का आज भी मुझे कितना चाहता है। आसपास के वातावरण को देखते हुए यह भी कम न था। शादी हुई और खूब धूमधाम से हुई।

घर की पहली शादी थी। अनगिनत मेहमान आए थे। उनमें से कइयों को निराश लौटना पड़ा। टीका-टिप्पणी का एक भी मौका हाथ नहीं लगा।

मैं खुद बहुत डरी हुई थी। एक तो लड़की की माँ नहीं थी। कर्ता धर्ता बड़ी बहन थी, जो अमेरिका में ही बस गई थी। पति-पत्नी दोनों डॉक्टर थे। भैया-भाभी तो अभी नये ही थे। पर स्वागत-सत्कार में, खान-पान में कहीं कोई त्रुटि या अव्यवस्था नहीं हो पाई थी।

मीता के पापा तो बिछे जा रहे थे, पर बहन-बहनोई, भैया-भाभी, चाचा-ताऊ सभी सौजन्य और विनम्रता की मूर्ति बने हुए थे।

और जयमाला के समय जब मीता को देखा तो बस आँखें जुड़ा गईं। अपना यह रूप-लावण्य इतने दिनों तक उसने कहाँ छिपा रखा था। लाल, सुर्ख बनारसी साड़ी में लिपटी वह किसी सलोनी गुड़िया-सी लग रही थी।

अन्तरजातीय विवाह को लेकर एक शूल था मन में, वह भी जाता रहा। इसी बात को लेकर ननदरानी कोंचती रही हैं। अब सर उठा के सबके सामने कह सकूँगी, ''भाई हमने तो लड़की का रूप-गुण देखा, विद्या-बुद्धि देखी और घर-परिवार देखा। बस, जात-पात को आजकल पूछता ही कौन है?''

आठ-दस दिन घर में मेला-सा लगा रहा।

मीता जितने दो-चार दिन रही, ननदों के बीच दबी-ढँकी बैठी रही। उनके बच्चों का लाड़-दुलार करती रही, रिश्ते की सास और जेठानियों की मान-मनुहार करती रही। सभी लोग प्रसन्न थे और जाते समय हर कोई मुझे बधाई देता हुआ गया।

शादी के बाद दोनों 8-10 दिन के लिए मसूरी घूमने चले गए थे। उनके लौटने तक मैंने सविता को रोक लिया था। सोचा, ननद-भौजाई थोड़े दिन साथ रह लेंगी।

दूसरे दिन सुबह-सुबह मैं रसोई में व्यस्त थी कि सविता पास आकर फुसफुसाई, ''माँ! बहूरानी को तो देखो।''

देखा, बड़े-बड़े पीले फूलोंवाली मैक्सी पहनकर वह मेज लगा रही है।

मैं और सविता-दोनों एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। इस बात को कौन उठाए, और कैसे? मैं तो आजकल लड़कों से ख़ौफ़ खाने लगी थी। पर सविता तो उन दोनों को घास नहीं डालती थी। दनदनाती हुई बाहर चली गई और बोली ''मीतारानी! आज ये कौन-सी पोशाक निकाल ली?''

''घर की ड्रेस है दीदी!'' फिर सविता की प्रश्नार्थक दृष्टि को समझते हुए बोली, ''माँ का आर्डर था कि मेहमानों के सामने साड़ी पहननी होगी। इसलिए इतने दिन पहनती रही। पर इतना बँधा-बँधा लगता है उसमें।''

''तो हमें मेहमानों में नहीं गिनती तुम?''

''आप तो घर की हैं-दीदी हैं अपनी।''

और कोई वक्त होता तो मैं इसी बात पर निहाल हो जाती, पर इस समय समस्या ज़रा नाजुक थी। मैंने आगे बढ़कर कहा, ''बेटे, घर में जब तब कोई आ निकलता है और लोग अक्सर तुम्हें देखने के लिए ही आते हैं।''

''पर माँ, साड़ी पहनकर जरा भी आराम दायक नहीं लगता। काम तो कर ही नहीं सकती मैं। बस, गुड़िया की तरह बैठे रहना पड़ता है।''

''तो अभी तुम्हारे गुड़िया की तरह सजने-सँवरने के ही दिन हैं। काम करने की तो जिंदगी पड़ी है। और अभी तो मैं बैठी हूँ।''

''ठीक है। लेकिन माँ, ऑफिस में तो साड़ी पहनकर जाना ज़रूरी नहीं है न? मुझसे तो गाड़ी चलाते न बनेगी।''

''दफ्तर सलवार-कमीज पहनकर जाया करना,'' मैंने फैसला सुना दिया।

लेकिन बहू घर में आती है तो समस्या सिर्फ पहनने-ओढ़ने की ही तो नहीं रहती।

उसका घर-भर में उन्मुक्त होकर घूमना, खिलखिलाना, दिन-भर ध्रुव डार्लिंग की रट लगाना, शिव से छीना-झपटी करना, भूख लगने पर नाश्ते के डिब्बे टटोलना, बात-बात पर गले में झूल जाना-सब कुछ आँखों में खटकने लगता।

बच्चों के पापा तक को तो उसने नहीं बख्शा था। सुबह वे अख़बार पढ़ते तो उनकी कुर्सी के हत्थे पर बैठकर ही पूरा अख़बार पढ़ जाती। घर में रहती तब तक उनके आस पास मँडराया करती, पापा का जाप किए जाती। उन्हें इसरार कर-करके खाना खिलाती, दवाई समय पर न लेने के लिए डाँटती। शाम को लौटती तो चाय का प्याला हाथ में लेकर सीधे बगिया में पहुँच जाती और छोटे से पीढ़े पर बैठकर उनसे बतियाती रहती। उस समय तो सचमुच मेरा खून जल जाता। घर में तो जो चल रहा था, ठीक ही था। बाहर उसका प्रदर्शन करने की क्या ज़रूरत थी? आसपास के घरों में कई जोड़ी आँखें उस समय खिड़कियों पर टँग जाती थीं।

हैरत तो यह थी कि बच्चों को, उनके पापा को, यह सब सहज-स्वाभाविक लगता था। उनके माथे पर शिकन तक नहीं आती थी। उस दिन तो हद ही हो गई।

रोज की तरह हम लोग दोपहर की चाय ले रहे थे कि मीता आँधी की तरह घर में घुस आई।

''अरे, आज इतनी जल्दी!''

''पहले आप लोग आंखें बंद कीजिए, प्लीज़!''

''बात क्या है?''

''पहले आँखें बन्द!''

और हमारे पलक झपकाते ही उसने दोनों के गले में एक-एक फूलमाला डाल दी और तालियाँ बजाते हुए किलकने लगी, ''मैनी मैंनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ़ द डे।'' (ये खुशी का दिन आपके जीवन में बार-बार आए)

''अरे, बात क्या है–'' मैंने कहना चाहा और एकदम मुझे याद आ गया– आज 12 दिसंबर थी, हमारी शादी की सालगिरह। दूसरी–दूसरी बातों में इतनी खो गई थी कि इसकी याद ही न आई थी।

मेरा चेहरा देखते ही वह मेरे गले में झूल गई–''पकड़ी गई न! आप लोगों ने सोचा होगा, चुप्पी लगा जाएँगे तो सस्ते में छूट जाएँगे। ऐसा नहीं होगा। पापाजी, तीन–चार कड़कते नोट तैयार रखिए। हम लोगों की नीयत आज अच्छी नहीं है।''

''तुम्हें कैसे पता चला बेटे! हमें तो याद ही नहीं रहा था।'' इन्होंने गद्‌गद होते हुए पूछा।

''लंच के समय ध्रुव की डायरी उलट–पलट रही थी। तब नज़र पड़ी। उसकी तो ऐसी ख़बर ली है मैंने। इतनी महत्वपूर्ण बात भूल गया।''

''ध्रुव है कहाँ?'' मैंने पूछा।

''शिव को लाने कॉलेज गया है। हमने तड़ी मारी है तो उसे पढ़ने थोड़े ही देंगे। आज तो हंगामा होगा।''

थोड़ी देर में वे दोनों भी आ गए। फिर तीनों ने मिलकर हम दोनों की आरती उतारी, पैर छुए और उपहार भी दिए। मेरे लिए सुन्दर रेशमी साड़ी और पापा के लिए स्वेटर। उसी समय दोनों चीज़ों का उद्‌घाटन करना पड़ा। कैमरे से घर पर रंगीन तस्वीरें खींची गईं। फिर सब लोग फेमस स्टूडियो गए। वहाँ एक ग्रुप फोटो हुआ। उस फोटो के लिए मीता पारंपरिक बहू की वेशभूषा में सजी थी और मेरे पीछे खूब अच्छे से सिर ढंककर खड़ी थी। शिव बार–बार उसे छेड़ रहा था।

फर्स्ट शो हम लोगों ने 'अंगूर' देखी। फिर ब्ल्यू डायमंड में खाना खाया। क्वालिटी में आइसक्रीम और बनारसी पानवाले के यहाँ का पान खाकर घर लौटे तो रात के ग्यारह बज रहे थे। बेहद थक गई थी मैं, पर यह थकान भी कितनी मीठी थी!

''बाप रे, थक गई मैं तो! इन लोगों ने सचमुच एक हंगामा कर डाला। अब इतनी उछल–कूद के लायक़ थोड़े ही रह गए हैं हम।'' रात मैंने हँसते हुए कहा।

पर देखा, ये चुप हैं और आग्नेय दृष्टि से मुझे घूर रहे हैं।

''क्या हुआ?'' मैंने घबराकर पूछा।

''वह लड़की बेचारी माँ–माँ कहकर मरी जाती है, और तुम?''

''क्यों, मैंने क्या किया है?'' मैंने खीझकर कहा। मन में छाई ख़ुशी भाप बनकर उड़ने लगी थी।

''मुझसे क्या पूछती हो? अपने–आप से पूछो कि तुमने क्या नहीं किया है। वह बेचारी बिना माँ की लड़की।''

''बिना माँ की है तो क्या करूँ।'' मैं एकदम फट पड़ी। शाम ममता का एक सोता फूट पड़ा था, अन्तस् में वह जमने लगा था, ''बिना माँ की है तो मैं क्या करूँ, यह तो बताइए। गोद में लेकर घूमूँ या लोरी गाकर सुनाऊँ?''

उन्होंने जवाब नहीं दिया और करवट बदलकर लेट गए। इतना ग़ुस्सा आया। यह अच्छा तरीक़ा है, जवाब देते न बने तो बात ही ख़त्म कर दो।

''अजीब मुसीबत है,'' मैं बुदबुदाई, ''दिनभर घर में धींगामुश्ती चलती रहती है। छोटे-बड़े का भी लिहाज नहीं रखा जाता। फिर भी मैं कुछ नहीं कहती। चुपचाप देखती रहती हूँ। फिर भी मुझे चैन नहीं है। पराई लड़की पर तो लोगों को इतनी ममता हो जाती है! साल-छः महीने में अपनी जाई घर आती है, उसका तो कभी ऐसा लाड़-दुलार नहीं किया।''

वे एकदम पलटे, ''उसका लाड़-दुलार क्या खाक करूँगा? वह तो तुम्हारे अनुशासन में पली हुई बिटिया है। आज तक कभी खुलकर बात भी की है उसने मुझसे?''

अब चुप रहने की बारी मेरी थी।

जनवरी के प्रथम सप्ताह में ध्रुव को अचानक छः महीने के प्रशिक्षण के लिए जर्मनी जाने का आदेश मिला। घर में एक ख़ुशी की लहर दौड़ गई। कितने सारे लोगों में सिर्फ़ उसी का चयन हुआ था। गर्व से हम लोगों के कलेजे गज-गज भर के हो गए थे।

जोर-शोर से तैयारियाँ शुरू हो गईं और मेरा दिल बैठने लगा। लड़का पहली बार इतनी दूर, परदेश में जा रहा था और फिर नयी-नवेली बहू को पीछे छोड़कर जा रहा था।

''मीतू को भी क्यों नहीं ले जाते? घूम आएगी।'' इन्होंने कहा था।

लेकिन मीता ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वह बोली, ''बेकार रुपये फेकने से क्या फ़ायदा पापाजी। ध्रुव का खर्च तो कंपनी देगी। मेरा तो हम लोगों को ही उठाना पड़ेगा। कभी अपना भी चान्स आयेगा। है न शिव?''

वह हमेशा की तरह हँसमुख बने रहने का भरसक प्रयास करती, पर कभी-कभी उसका चेहरा बेहद उदास हो आता। स्वाभाविक भी था। पर मुझे चिंता हो चली थी। आखिर मैंने एक दिन ध्रुव से कहा, ''बेटे, तुम्हारे लौट आने तक मीता अपने पापा के यहाँ रहे तो कैसा है?''

''कहीं भी रह लेगी माँ। छः महीने की तो बात है। पलक झपकते बीत जाएँगे। और सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो लौटते समय पंद्रह-बीस दिन के लिए उसे बुला लूँगा। घूम-घाम लेंगे।''

उसने तो बात समाप्त कर दी थी, पर मेरी चिंता वैसी की वैसी बनी हुई थी। बच्चों के पापा का स्वास्थ्य इन दिनों कुछ ठीक नहीं था। वह यहाँ उदास बनी रहेगी तो उसका सम्बन्ध सीधे मुझसे जोड़ देंगे। इसीलिए डर लग रहा था।

शिव और मीता उसे छोड़ने बम्बई तक गए थे। लौटकर मीता अपने पापा के यहाँ चली गई। उसकी भाभी के यहाँ लड़का हुआ था। फिर महीने-भर बाद भाभी अपने पीहर चली गई तो उसने घर की देखभाल के लिए वहाँ रह जाना चाहा तो हमने कोई आपत्ति नहीं की।

घर एकदम सुनसान हो गया था।

बच्चों के पापा ध्रुव से ज़्यादा मीता को याद कर रहे थे। हर चौथे-आठवें दिन समधियाने पहुँच जाते। कभी घसीटकर साथ मुझे भी ले जाते। तब समधीजी चुटकी लेते, ''अपने बच्चों के लिए कैसे दौड़-दौड़कर आ जाते हैं आप। मुझ गरीब की तो कभी सुध भी न ली।''

शिव भी अक्सर देर से घर लौटता। कभी भाभी के साथ खरीददारी करनी होती थी या कभी उन्हें फिल्म दिखानी होती थी।

कभी-कभार वह भी घर पर आ जाती, पर पहले का-सा तूफान बरपा नहीं करती। हँसती-खिलखिलाती, पर उसमें पहले की-सी जीवंतता नहीं थी। जब वह चली जाती तो यह कहते, ''कहा था, साथ चली जाओ। तब नहीं मानी, पैसे का मुँह देखती रही। अब मन-ही-मन घुल रही है।''

मार्च का अंतिम सप्ताह रहा होगा।

एक रात इनके पेट में जोर का दर्द उठा। पता नहीं कितनी देर से तड़प रहे थे। मेरी तो अचानक नींद खुली तो देखा, पेट पकड़े बैठे हैं। चेहरा सफेद पड़ गया है।

''क्या हुआ?'' मैंने घबराकर पूछा, ''क्या पेट दर्द कर रहा है?''

उन्होंने जवाब नहीं दिया। मैं उठी, पानी गरम किया। रुई में हींग की डली लपेटकर उसे जलाया। फिर प्लेट में अजवायन, काला नमक, हींग और गरम पानी लेकर इनके पास आई। वे मना करते रहे, पर जब मैं बार-बार आग्रह करने लगी तो चिढ़कर बोले, ''जरा बात तो समझा करो। वैसा दर्द नहीं है भाई।''

''फिर कैसा है?''

शिव की परीक्षा चल रही थी पढ़कर शायद अभी-अभी सोया था, पर उसे जगाना पड़ा। उतनी रात जाकर वह डॉ. शुक्ला को लिवा लाया।

उन्होंने मुआयना किया और पूछा, ''ये तकलीफ कब से है आपको?''

''जी,15-20 दिन से थोड़ा कष्ट हो रहा था।''

इतना ताव आया मुझे। इतने दिनों तक चुप बने रहने में क्या तुक थी। शिव बोला, ''माँ। यह समय गुस्सा करने का नहीं है। बाद में निपट लेना। पहले उन्हें सँभालो।''

राम-राम करके वह रात बीती। सुबह भर्ती होना ही पड़ा। ऑपरेशन ज़रूरी था। इन्होंने पहले ही अपने आदेश सुना दिए:

''प्राइवेट नर्सिंग होम नहीं जाएँगे।''

''सरकारी अस्पताल में भी प्राइवेट वार्ड नहीं लेंगे। जनरल में रहेंगे। इस ऑपरेशन के बाद नर्सिंग की बहुत ज़रूरत होती है। प्राइवेट वार्ड में कोई झाँकता भी नहीं। दस बार बुलाने जाना पड़ता है।''

उनकी बात न मानने का कोई उपाय नहीं था। खज़ाने की चाबी उन्हीं के पास थी। ध्रुव यहाँ होता तो बात दूसरी थी, पर अब उतनी दूर से उसे बुलाने का कोई मतलब भी न था।

जनरल वार्ड में जो एक रात गुज़ारी है- उफ़। ज़िंदगी-भर याद रहेगी। इनकी वैसी हालत में नींद आने का कोई प्रश्न नहीं था। पर आसपास के वातावरण ने मन को इतना बोझिल कर दिया कि सुबह उठकर लगा, मैं ही बीमार हूँ।

और दुर्गन्ध अब भी याद आती है तो मन पर काँटे–से उग आते हैं। सुबह शिव कहीं से चाय लाया था मेरे लिए, पर घूँट भर भी गले से नहीं उतरी।

दस बजे ऑपरेशन होने को था। नौ बजे ही इन्हें स्ट्रेचर पर डालकर ले गए। मैं और शिव भी पीछे–पीछे चल पड़े। जहाँ तक जाने दिया वहाँ तक गए। फिर मैं वहीं बैठकर इष्टदेव का जाप करने लगी। शिव बेचारा दौड़–धूप में व्यस्त हो गया।

''नमस्ते बहिनजी।''

मैंने चौंककर देखा–मीता के पापा थे।

''आपने तो ख़बर भी नहीं की। इतने बेगाने हो गए हैं हम लोग ...। उनके स्वर में आक्रोश था, शिकायत थी। मैं क्या जवाब देती।

''वो तो मीतू अभी किसी काम से घर गई थी, तब पड़ोसी मेहता साहब ने बताया।''

''सब कुछ इतना अचानक हो गया,'' मैंने अपराधी स्वर में कहा, ''शिव बेचारा एकदम अकेला पड़ गया था। सारी दौड़–भाग उसी के जिम्मे थी।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ। उसे अकेले सारी दौड़–भाग करने की क्या ज़रूरत थी। हम लोग किसलिए हैं? कल को ध्रुव सुनेगा तो क्या कहेगा?''

उनसे तो जो भी कहेगा, मुझे तो अपनी चिंता हो गई थी। ध्रुव मुझसे क्या कहेगा? इन पर इतना ताव आ रहा था। दर्द से तड़प रहे थे, पर मजाल है जो बटुए की पकड़ जरा–सी ढीली हो जाए। जनरल वार्ड में रहेंगे। वहाँ नर्सिंग अच्छी होती है–हुँह। अब इतने बड़े आदमी को उस नर्क में ले जाऊँगी तो कैसा लगेगा।

अपनी उस दुश्चिन्ता में यह पूछना भी याद न रहा कि मीता कहाँ है।

साढ़े ग्यारह बजे उन्हें ऑपरेशन थियेटर के पास वाले कमरे में लाकर रखा गया। ऐसे हट्टे–कट्टे, हँसते–बोलते व्यक्ति को इस तरह असहाय अवस्था में देखकर मेरी तो रुलाई फूट पड़ी। मीता के भाई नरेश मुझे सहारा देकर बाहर ले आए और वापस बेंच पर बिठा दिया। असहाय–सी मैं वहाँ बैठी रही।

दो घंटे बाद उन्हें वार्ड में ले जाने की अनुमति मिली। ये दो घंटे मेरे लिए दो युग हो गए थे।

वार्ड में वापसी के समय काफिला जरा बड़ा था। घर–परिवार के लोग थे और स्टाफ़ के भी। ढेर–सी शीशियाँ स्ट्रेचर के साथ चल रही थीं और सब लोग उन्हें उठाए हुए थे।

''माँ, तुम सीढ़ियों से आ जाओ। लिफ़्ट में तुम्हें परेशानी होगी।'' शिव ने कहा तो मैं सीढ़ियों की ओर मुड़ गई।

हाँफती–काँपती ऊपर पहुँची, तब तक स्ट्रेचर शायद वार्ड में पहुँच चुका था, क्योंकि गलियारे में उसका कहीं पता नहीं था। मैं वार्ड तक पहुँची ही थी कि नरेशजी की आवाज़ आई, ''माँजी, इधर आइए।''

उनके पीछे चलती हुई मैं गलियारे के छोर तक पहुँची। सर्व सुविधायुक्त कमरे का दरवाज़ा खुला और खाली

स्ट्रेचर थामे लोग बाहर निकले।

''यह कमरा।'' मैंने अस्फुट स्वर में कहा।

''भाभी ने आरक्षित करवाया है।'' मेरा असमंजस ताड़कर शिव पास आकर फुसफुसाया।

''ये उसके बस की ही बात थी जी,'' उसके पापा गर्व से बता रहे थे, ''अधीक्षक से जाकर भिड़ गई। खड़े-खड़े कमरे का आरक्षण करवा लिया। बहुत लड़ाकू है यह लड़की।''

मैंने मीता की ओर देखा। वह चुपचाप इनके पलंग के पास खड़ी थी।

''घर पर तो तिनका भी नहीं उठाती, नरेश बोले, यहाँ आई है, तब से सफाई में जुटी है। तीन बार तो घर के चक्कर लगा आई है।''

''ये सासजी को खुश करने के उपाय हैं।'' समधीजी ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा।

कमरा सचमुच धुला-पुँछा चमक रहा था। दोनों पलंगों पर घर की साफ चादरें और तकिये रखे हुए थे। मेज पर सफेद मेजपोश था। अलमारी में कागज बिछे हुए थे। उसमें मेरे और इनके कुछ कपड़े तह कर रखे हुए थे। चाय, शक्कर, प्याले, प्लेटें, माचिस कुछ भी नहीं भूली थी वह। स्नान घर में बाल्टी, मग, तौलिया, चौकी-सब व्यवस्थित ढंग से सजा हुआ था।''

थोड़ी देर में स्टोव की घरघराहट शुरू हुई। देखा, मीता चाय बना रही थी।

''माँ, चाय पी लीजिए।'' थोड़ी देर में वह मेरे सामने खड़ी थी। कमरे में आने के बाद से उसने पहली बार बात की थी और उसका स्वर अत्यंत सपाट था।

''चाय! यहाँ?'' मैंने एक बेमतलब-सा जुमला उठाया।

''तो कहाँ पिएँगी! क्या पापा को इस हालत में छोड़कर आप घर जाएँगी?''

उसकी बात में तर्क था पर उससे भी ज़्यादा वजनदार उसकी आवाज थी। मैंने चुपचाप प्याला होठों से लगा लिया। मेरे चाय लेते ही सबने जैसे राहत महसूस की, क्योंकि सभी थके हुए थे।

बहुत बेमन से प्याला उठाया था मैंने, पर सच कहूँ तो पीने के बाद जी एकदम हलका हो गया। सुबह से सिर भारी हो रहा था। यह भी थोड़ा उतर गया।

पाँच बजे के करीब उन्हें कुछ होश आया। मीता उनके पास ही बैठी हुई थी। उसे देखकर उतनी पीड़ा में भी वे थोड़ा-सा मुस्करा दिए। तब मुझे अहसास हुआ कि सचमुच उनकी यंत्रणा बहुत भीषण रही होगी। नहीं तो क्या ऑपरेशन से पहले एक बार भी अपनी लाड़ली बहू को याद न करते?

''पापा, आप और भैया अब घर जाइए।'' मीता का फरमान छूटा, ''रात को मेरा और माँ का खाना लेकर भैया आएगा। आप अब सुबह आइएगा।''

''मैं फल-फूल खा लूँगी।'' मैंने हल्का-सा प्रतिवाद किया।

''आपके लिए पक्का खाना बन जाएगा।'' उसने मेरी ओर बिना देखे जवाब दिया।

''वैसे बहनजी, चाहें तो हमारे साथ घर चलकर-।''

''पापा, प्लीज़!'' उसने जैसे सारे विवाद को समाप्त करते हुए कहा और उन दोनों को जबरन घर रवाना किया। फिर शिव के साथ बैठकर उसने सारे पर्चे पढ़े और फिर शिव को दवाइयाँ लाने भेज दिया और खुद इनके पलंग के पास स्टूल खींचकर बैठ गई।

दूसरे पलंग पर मैं चुपचाप पड़ी रही। बोलने की शक्ति ही नहीं रह गई थी। दो रातों का जागरण था, थकान थी, तनाव था। कब झपकी लग गई, पता ही नहीं चला। मीता ने खाने के लिए जगाया, तब जाकर आँख खुली।

समधीजी से रहा नहीं गया होगा। खाना लेकर खुद आ गए थे। बदले में लाड़ो की फटकार भी सुननी पड़ी। वे शिव का भी खाना लाए थे, पर मीता ने उसे अस्पताल में खाने नहीं दिया।

''तुम पापा के साथ घर जाओगे और सुबह परीक्षा के बाद ही यहाँ आओगे। समझे?''

''लेकिन भाभी-यहाँ-'' वह मिमियाया।

''यहाँ की चिंता मत करो। यहाँ मैं हूँ, माँ है, भैया है।''

शिव बहुत कुनकुनाया, आखिर उसे जाना ही पड़ा। उन लोगों को छोड़ने के लिए नरेशजी नीचे तक गए। मीता ने उनसे मेरे लिए पान मँगवाया। पान के बिना आज पूरा दिन हो गया था, पर मुझे याद ही नहीं आई थी। पर पता नहीं कैसे मीता जान गई थी।

खाने के बाद उसने मेरा बिस्तर ठीक किया। फिर स्नान घर में जाकर सारी प्लेटें-गिलास धो डाले। दूध एक बार फिर गरम किया और सोने की तैयारी करने लगी।

''भैया, बारह बजे तक मैं एक झपकी ले लूँ। फिर डयूटी पर आ जाऊँगी। फिर चाहे आप पूरी रात सोए रहना।'' उसने कहा और आराम-कुर्सी में हाथ का तकिया बनाकर लेट गई।

नरेशजी पलंग के पास एक कुर्सी खींचकर बैठ गए। मेरे आराम में ज़रा भी विघ्न न डालते हुए दोनों भाई-बहन रात भर डयूटी निभाने को तत्पर थे। मुझे कैसा तो लगा।

''मीता!'' मैंने स्नेहसिक्त स्वर में आवाज दी, ''भैया आराम-कुर्सी में लेट जायेंगे। तू इधर पलंग पर आ जाना, दिन-भर खड़ी की खड़ी है।''

पता नहीं मेरी आवाज में कुछ था या उसने प्रतिवाद नहीं करना चाहा। वह चुपचाप मेरे पास आकर लेट गई। ''आप सोने लगें तो मुझे जगा लीजिएगा भैया।'' उसने कहा और आँखें मूँद लीं। नरेशजी आराम-कुर्सी पलंग के पास खिसकाकर उसमें लेट गए। कमरे में एक अजीब-सी शांति छा गई।

मैंने मीता की ओर देखा। पता नहीं क्यों उसे देखकर मुझे सविता की याद हो आई। दो बच्चों की माँ हो गई है, पर

अब भी कभी-कभी उस पर बचपन सवार हो जाता है। माँ के पास लेटने का मोह हो आता है। उन क्षणों में वह एकदम नन्हीं सी बच्ची बन जाती है।

मेरे पास लेटी यह नन्ही-सी लड़की! इसका भी तो कभी-कभी मन होता होगा! तब किसके आँचल में मुँह छुपाती होगी! बड़ी बहन है, वह सात समन्दर पार इतनी दूर है। भाभी तो खुद ही लड़की है अभी।

वह मेरी ओर पीठ करके लेटी थी निस्पंद। सलवार-सूट उतारकर उसने नाइटी पहन ली थी। उसमें वह एकदम बच्ची-सी लग रही थी। दिनभर किसी उग्र तेज से दपदप करता उसका चेहरा अब एकदम निरीह, निष्पाप शिशु का-सा लग रहा था।

ममता का एक ज्वार-सा उठा मन में। एकदम उसे अंक में भर लेने की इच्छा हुई। पर संकोच में मैं बस उसकी पीठ पर, बालों पर हाथ फेरती रही।

अचानक मेरी उँगलियाँ उसकी पलकों को छू गईं। वे गीली थीं।

''क्या हुआ बेटे?'' मैंने प्यार से पूछा।

वह कुछ नहीं बोली। बस, जैसे रुलाई रोकने के लिए होंठ सख्ती से भींच लिए।

''अपने पापाजी के लिए परेशान हो? पर डॉक्टर साहब तो कह रहे थे, वे एकदम ठीक हैं। ऑपरेशन बहुत अच्छा हुआ है। बस, एक-दो दिन में उठकर बैठ जायेंगे। यही कह रहे थे न!'' कहते-कहते मैं भी शंकाकुल हो उठी।

वह एकदम पलटी। कुछ क्षण मुझे देखती रही, फिर मेरी छाती में मुँह छुपाकर सुबकते हुए बोली, ''पहले यह बताइए, आपने हमें खबर क्यों नहीं की?'' पापाजी इतने बीमार हो गए और किसी को मेरी याद भी न आई?

यही तो। अपने-आपको कटघरे में खड़ा करके मैं बार-बार पूछ रही थी-मुझे उसकी याद क्यों नहीं आई? अपनी बिटिया को कैसे भूल गई थी मैं?

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'स्नेहबंध' कहानी किन संबंधों पर आधारित है?
2. मीता से पहली भेंट पर उसकी सास पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. मीता के ससुरालवालों ने जात-पात की बजाय किन बातों को महत्व दिया था?
4. अपनी बिटिया को कैसे भूल गई थी मैं? इस वाक्य में बिटिया शब्द किसके लिए कहा गया है?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. ध्रुव ने मीता के पिता को किस प्रकार आश्वस्त किया?
2. शादियों में कुछ लोग किस उद्देश्य से जाते हैं? सबसे अधिक आलोचना किसे झेलनी पड़ती है?
3. मीता की सास को मीता की कौन-सी बातें खटकती थीं?

4. मीता के विदेश न जाने के पीछे क्या भावना थी?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ''हम लोग इतने दकियानूसी नहीं हैं कि एक आर्किटेक्ट लड़की में सोलहवीं सदी की बहू तलाशें।'' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. 'स्नेहबंध' कहानी के माध्यम से लेखिका क्या कहना चाहती हैं?
3. कहानी के आधार पर मीता की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. उस प्रसंग का उल्लेख कीजिए जिसके कारण मीता की सास के व्यवहार में परिवर्तन आया?
5. मीता के रोने का क्या कारण था?
6. निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

   1. ममता का एक ज्वार.....निस्पंद पड़ी रही।

   2. कभी-कभार.....घुल रही है।
7. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव-विस्तार कीजिए :

   1. माँ की जीवनभर की साधना है।

   2. सभी सौजन्य और विनम्रता की मूर्ति बने थे।

   3. मन पर काँटे से उग आते हैं।

भाषा अध्ययन-

1. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरे छाँटकर लिखिए :-

   अ. पहली नज़र में उसका हुलिया देखा और मन खट्टा हो गया था।

   आ. उस समय तो सचमुच मेरा खून जल जाता पर मैंने किसी को हवा नहीं लगने दी।

   इ. प्रेम करते समय इन लोगों की अक्ल क्या घास चरने चली जाती है।

   ई. हमें नज़र मत लगाओ।

   उ. बहू को लेकर मन में कितनी कोमल कल्पनाएँ थीं, सब राख हो गईं।
2. निम्नलिखित शब्दों के सामने कुछ विकल्प दिए गए हैं, उनमें से सही विकल्प चुनकर लिखिए -

   1. स्ट्रेचर (हिन्दी, अंग्रेजी, देशज शब्द)

   2. नज़र (हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू शब्द)

   3. जीवन (तत्सम, तद्भव, देशज शब्द)

   4. माटी (तत्सम, विदेशी, देशज शब्द)
3. निम्नलिखित वाक्यों में अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को शुद्ध करके लिखिए :

   क. लेकिन बहू घर में आति न थी।

ख. उसे परदरशन करने की क्या ज़रूरत थी?

ग. राम को यह सब सेहज-स्वाभाविक लगता था।

घ. पापा का स्वास्थ्य इन दीनों ठीक न था।

4. निम्नलिखित अनुच्छेद में यथास्थान विरामचिह्नों का प्रयोग कीजिए-

कभी कभार वह भी घर पर आ जाती पर पहले का सा तूफान नहीं करती हँसती खिलखिलाती पर उसमें पहले की सी जीवंतता नहीं थी जब वह चली जाती तो यह कहते कहा था साथ चली जाओ तब नहीं मानी पैसे का मुँह देखती रही अब मन ही मन घुल रही है

योग्यता विस्तार

1. मालती जोशी की अन्य कहानियाँ अपने विद्यालय के पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।
2. वर्तमान में एकल परिवार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है-इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
3. जिनके पुत्र-पुत्रियाँ अपने वृद्ध माता-पिता को छोड़कर चले जाते हैं, उन्हें किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? चर्चा कीजिए।
4. वर्तमान में कामकाजी महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनका उल्लेख कीजिए।

शब्दार्थ

इसरार - अनुरोध ***शिकन*** - सलवट / बल पड़ना ***धींगामुश्ती*** - शरारत ***निस्पंद*** - शांत, स्वर-मुक्त ***अंक***-गोद ***कोंचना*** - ताने मारना ***तल्ख*** - कटु, कड़वा, तीखा, तीखापन ***कहकहा*** - हंसीमज़ाक़ के स्वर, ठहाके ***गुलजार*** - फूलों से भरे बाग की तरह, आनंदित वातावरण, प्रसन्नता से भरा, हरा-भरा, ***अदब-कायदा*** - विनीत या शिष्ट व्यवहार ***सरजाम*** - व्यवस्था ***कर्कश*** - तीखा स्वर ***तंद्रा*** - नींद ***अव्यक्त*** - जिसे व्यक्त न किया जाए ***अनमने*** - बिना मन के ***हुलिया*** - रंग-रूप ***करबद्ध निवेदन*** - हाथ जोड़कर की गई प्रार्थना ***आश्वस्त*** -भरोसा ***दकियानूसी*** -रूढ़िवादी ***आर्किटेक्ट*** - वास्तुकार ***सौजन्यपूर्ण***- सज्जनतापूर्ण ***आचार-संहिता*** - नियमावली ***मीनमेख*** - नुक्स दोष निकालना / मीन और मेष दो राशियाँ (मुहावरे के रूप में प्रयुक्त वाक्यांश) ***गद्‌गद्‌*** - प्रसन्न होना ***आग्नेय दृष्टि*** - कड़ी नज़र से देखना ***यंत्रणा***- कष्ट ***मिमियाना***- गिड़गिड़ाना ***प्रतिवाद*** - विरोध करना ***स्नेहसिक्त*** - प्रेम में डूबा हुआ।

***